संपादकीय

हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में

आज इक्कीसवीं सदी के दो दशक बीत चुके हैं। हिंदी को भारत की राजभाषा के स्थान पर विराजमान होकर भी सात दशक बीत गए हैं। ऐसे समय में हिंदी के वैश्विक परिदृश्य पर चर्चा करना आवश्यक है और प्रसांगिक भी। अमीर खुसरो ने कहा था, "मैं हिंदुस्तान की तुती हूँ। यदि वास्तव में तुम मुझे जानना चाहते हो तो हिंन्दवी में पूछो मैं तुम्हें अनुपम बातें बता सकता हूँ।" उर्दू के मशहूर शायर इकबाल ने कहा कि, "हिंदी है हम वतन है हिंदोस्ताँ हमारा।" भारतेंदु ने कहा था, "निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, निज भाषा के ज्ञान बिन मिटै न हिय का शूल।" महापुरूषों ने हिंदी के महत्व का जाना समझा और उसका साथ भी दिया।

जब हम आज हिंदी के वैश्विक परिदृश्य को दोखते हैं तो हमें वर्तमान परिस्थितियों को देखना भी लाज़मी है। बीसवीं सदी के अंतिम दशक से ही भूमंडलीकरण, बाज़ारवाद, सूचना-विस्फोट, तकनीकी क्रांति की चर्चा शुरु हो चुकी थी। वैश्वीकरण उस विश्वव्यापी प्रवृत्ति का नाम है, जिसने पिछले कुछ वर्षों से पूरी दुनिया के जनजीवन को प्रभावित किया है और एक खास दिशा में मोड़ा है। भूमंडलीकरण, उदारीकरण, आर्थिक सुधार, नई आर्थिक नीति आदि इसके कई नाम हैं। आज इसकी आंच सब महसूस कर रहे हैं और यह पूरी दुनिया में चर्चा, बहस, विवादों और संघर्ष का केन्द्र बन चुकी है।

ऐसे में हम हिंदी की बात करते हैं तो आज वह बोलने वालों की संख्या के आधार पर चीनी के बाद विश्व की दूसरी सबसे बडी भाषा बन गई है। इस बात को सर्वप्रथम सन् 1999 में 'मशीन ट्रांसलेशन समिट' अर्थात् यांत्रिक अनुवाद नामक संगोष्ठी में टोकियो विश्वविद्यालय के प्रो. होजुमि तनाका ने भाषाई आँकडे पेश करके सिद्ध किया है। उनके द्वारा प्रस्तुत आँकडों के अनुसार विश्वभर में चीनी भाषा बोलने वालों का स्थान प्रथम और हिंदी का द्वितीय है। अंग्रेजी तो तीसरे क्रमांक पर पहुँच गई है। भले ही हम इन आँकडों पर भरोसा न करें किंतु बोलने के स्तर पर हिंदी आज अग्रणी अवश्य है। पर सिक्के दूसरा पहलू यह भी है कि अंग्रेजी के प्रयोक्ता विश्व के सबसे ज्यादा देशों में फैले हुए हैं। वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशासनिक, व्यावसायिक तथा वैचारिक गतिविधियों को चलाने वाली सबसे प्रभावशाली भाषा बनी हुई है। हिंदी का साहित्य उच्चकोटि का होते हुए भी ज्ञान का साहित्य अंग्रेजी के स्तर का नहीं है अत: निकट भविष्य में विश्व व्यवस्था परिचालन की दृष्टि से अंग्रेजी की उपादेयता एवं महत्त्व को कोई खतरा नहीं है। इस मोर्चे पर हिंदी का बडे ही सबल तरीके से उन्नयन करना होगा। हिंदी से उम्मीद इसलिए भी है कि आज वह अंग्रेजी के बाद विश्व के सबसे ज्यादा देशों में व्यवहृत होती है। हालांकि विगत कुछ वर्षों से इस दिशा में उचित प्रयास हो रहे हैं। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा द्वारा हिंदी माध्यम में एम.बी.ए.का पाठ्यक्रम आरंभ किया गया। इसी तरह "इकोनामिक

टाइम्स' तथा "बिजनेस स्टैंडर्ड' जैसे अखबार हिंदी में प्रकाशित रहे हैं। मीडिया में "स्टार न्यूज' जैसे चैनल जो अंग्रेजी में आरंभ हुए थे वे बाजारीय दबाव के चलते पूर्णत: हिंदी चैनल में रूपांतरित हो गए। साथ ही, "ई.एस.पी.एन' तथा "स्टार स्पोर्ट्स' जैसे खेल चैनल भी हिंदी में कमेंट्री देने लगे हैं।

आज भारतीय उपमहाद्वीप ही नहीं बल्कि दक्षिण पूर्व एशिया, मॉरीशस,चीन,जापान, कोरिया, मध्य एशिया, खाडी देशों, अफ्रीका, यूरोप, कनाडा तथा अमेरिका तक हिंदी कार्यक्रम उपग्रह चैनलों के जरिए प्रसारित हो रहे हैं और भारी तादाद में उन्हें दर्शक भी मिल रहे हैं। विगत कुछ वर्षों में एफ.एम. रेडियो के विकास से हिंदी कार्यक्रमों का नया श्रोता वर्ग पैदा हो गया है। हिंदी अब नई प्रौद्योगिकी के रथ पर आरूढ होकर विश्वव्यापी बन रही है।

माइक्रोसाफ्ट, गूगल, सन, याहू, आईबीएम तथा ओरेकल जैसी विश्वस्तरीय कंपनियाँ अत्यंत व्यापक बाजार और भारी मुनाफे को देखते हुए हिंदी प्रयोग को बढावा दे रही हैं। संक्षेप में, यह स्थापित सत्य है कि अंग्रेजी के दबाव के बावजूद हिंदी बहुत ही तीव्र गति से विश्वमन के सुख-दु:ख, आशा-आकांक्षा की संवाहक बनने की दिशा में अग्रसर है। आज विश्व के दर्जनों देशों में हिंदी की पत्रिकाएँ निकल रही हैं तथा अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, जापान, आस्ट्रिया जैसे विकसित देशों में हिंदी के कृति रचनाकार अपनी सृजनात्मकता द्वारा उदारतापूर्वक विश्व मन का संस्पर्श कर रहे हैं। हिंदी के शब्दकोश तथा विश्वकोश निर्मित करने में भी विदेशी विद्वान सहायता कर रहे हैं।

आज जरूरत इस बात की है कि हम विधि, विज्ञान, वाणिज्य तथा नवीनतम प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पाठ्यसामग्री उपलब्ध करें। इसके लिए समवेत प्रयास की जरूरत है। यह तभी संभव है जब लोग अपने दायित्वबोध को गहराइयों तक महसूस करें और सुदृढ़ इच्छाशक्ति के साथ संकल्पित हों। आज समय की माँग है कि हम सब मिलकर हिंदी के विकास की यात्रा में शामिल हों ताकि तमाम निकषों एवं प्रतिमानों पर कसे जाने के लिये हिंदी को सही मायने में विश्व भाषा की गरिमा प्रदान कर सकें।

इस अंक में शोधालेख, लेख, कविता तथा कहानी आपके अवलोकनार्थ है। आशा है आपको यह अंक पसंद आए।

इति नमस्कारान्ते....

प्रधान संपादक

प्रो. प्रतिभा मुदलियार